Established in 2008

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत

NAAC Accredited | UGC Approved | Recognized by Statutory Councils

विजयदान देथा के साहित्य का समग्र मूल्यांकन

शोधार्थी

राजेन्द्र

एनरोलमेन्ट नं.

JVR-II/22/11013

शोध निर्देशक

प्रो. निरुपमा हर्षवर्धन

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग

शिक्षा एवं कार्यप्रणाली संकाय

पीएच.डी.

(हिन्दी)

शोध उपाधि पंजीयन के लिए प्रस्तुत

सार-संक्षेप (SYNOPSIS)

विजयदान देथा के साहित्य का समग्र मूल्यांकन

शोध प्रस्तावना

व्यक्ति जिज्ञासा के कारण जानने के लिए उत्सुक रहता है। उसी जिज्ञासा के फलस्वरूप वह नवीन ज्ञान के लिए ही अनुसंधान करता है। अनुसंधान के द्वारा मनुष्य ज्ञान के क्षेत्र में अपनी जिज्ञासा को शान्त करता है। इसी जिज्ञासा से ही नित–नए आविष्कार और अनुसंधान सभी क्षेत्रों में होते है, उनमें से एक साहित्य का क्षेत्र भी है। साहित्य के क्षेत्र में भी नये–नये अनुसंधान के द्वारा नये ज्ञान की खोज की जाती है।

हिन्दी साहित्य का क्षेत्र वर्तमान काल में बहुत समृद्ध है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र को अध्ययन की दृष्टि से चार कालों में बांटा गया है (1) आदि काल, (2) भक्ति काल, (3) रीति काल, (4) आधुनिक काल

आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य की विधाओं में प्रचुर मात्रा में वृद्धि हुई। इस काल में हिन्दी साहित्य में पद्य के साथ–साथ गद्य का भी विकास हुआ और गद्य की विभिन्न विधाएं जैसे उपन्यास, कहानी, निबंध, एकांकी संग्रह, जीवनी, संस्मरण, यात्रा–संस्मरण, रिर्पोताज इत्यादि विधाओं का विकास हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में हुआ। आधुनिक काल का समय 1850 ई. से माना जाता है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न लेखकों द्वारा अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य की सेवा की हैं। इन्ही में से एक है– विजयदान देथा इन्होंने हिन्दी और इसकी उप भाषा राजस्थानी के साहित्य को पर्याप्त रूप से समृद्ध करने में अपना अमूल्य योगदान दिया। देथा जी ने जब अपनी साहित्य साधना शुरू की तो कुछ समय बाद इन्हे अपनी जन्म भूमि की याद आई और फिर यह अपने गाँव बोरून्दा आकर बस गए और यहीं पर हिन्दी और राजस्थानी की साहित्य साधना मे लीन हो गए। विजयदान देथा को राजस्थानी साहित्य में योगदान के लिए राजस्थान का भारतेन्दु कहा जाता है। कहानियों के क्षेत्र में इनके योगदान के लिए यह राजस्थान के प्रेमचन्द कहे जाते है। इन्होंने हिन्दी के बाद अपनी साहित्य भाषा राजस्थानी को बनाया और इसकी साधना में यह जिन्दगी भर लीन रहे है। इन्होंने अपनी आजीविका भी एक लेखक के रूप में ही अपनाई इन्होंने इसी लेखनी की धार को समृद्ध करने के लिए कभी नौकरी नहीं करने का प्रण लिया था। जिसे इन्होंने अपने जीवन में बखूबी निभाया और संघर्षों के साथ राजस्थानी भाषा साहित्य को अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर पहचान दी।

विजयदान देथा का व्यक्तित्व और कृतित्व :–

विजयदान देथा का जन्म सितम्बर 1926 को बोरून्दा, जिला जोधपुर, राजस्थान में हुआ था। इनका निधन 10 नवम्बर 2013 को 87 वर्ष की उम्र में बोरून्दा में हुआ।

इन्होंने अपना व्यवसाय और आजीविका लेखन कार्य को ही बनाया। ये देथा गोत्र के चारण थे।

इनके पिता सबलदान देथा और दादा जुगतिदान देथा भी राजस्थान के जाने माने कवियों में से थे। विजयदान देथा को राजस्थानी में "बिज्जी" के उपनाम से भी पहचाना जाता है। इनकी शिक्षा–दीक्षा बोरून्दा के अलावा जैतारण, बाड़मेर, और जोधपुर में हुई थी। इन्होंने जोधपुर के जसवन्त कॉलेज से हिन्दी में एम.ए. पूर्वाद्ध की परीक्षा दी थी।

उतर्राद्ध में इन्होंने पढ़ाई छोड़ दी थी। इनको साहित्य साधना के लिए राजस्थान का सर्वोच्च पुरस्कार राजस्थान रत्न से नवाजा गया था। इसके अलावा भारत सरकार से इन्हें पद्मश्री पुरस्कार से भी नवाजा गया।

"बिज्जी" अपने साधारण रहन–सहन के साथ ही आजीवन माँ भारती की साहित्य साधना करते रहे, इनकी रचनाएं समाजवादी, सामन्त विरोधी, नारीवाद से युक्त थी।

सम्मान :–

1 राजस्थान रत्न सम्मान–2012

2 पद्मश्री सम्मान–2007

3 राजस्थानी के लिए – 1974 का साहित्य अकादमी पुरस्कार

4 1992 में भारतीय भाषा परिषद् पुरस्कार

5 1995 का मरूधरा पुरस्कार

6 2002 का बिहारी पुरस्कार

7 2006 का साहित्य चुड़ामणि पुरस्कार

8 मेहरानगढ़ संग्रहालय ट्रस्ट द्वारा रावसीहा पुरस्कार

9 कवि काग पुरस्कार 2011

इन्हें 2011 में साहित्य के नोबेल पुरस्कार हेतु नामित किया गया था।

रचनाएं :–

विजयदान देथा ने 800 से अधिक लघु कथाएं लिखी। इन्होंने राजस्थानी में बांता री फुलवारी कहानी संग्रह का 14 खण्डों में लेखन किया। इनका हिन्दी रूपान्तरण बातों की बगियां के नाम से 14 खण्डों में किया गया।

राजस्थानी कृतियां :–

- बातां री फुलवारी भाग–1–14, 1960 –1974 लोक लोरियां

- प्रेरणा (कोमल कोठारी द्वारा सह–सम्पादित) 1953
- सोरठा, 1956–1958
- टिडोराव, राजस्थानी की प्रथम जेब में रखने लायक पुस्तक 1965
- उलझन, 1984 (उपन्यास)
- अलेखुन हिटलर, 1984, (लघु कथाएं)
- रूँख, 1987
- कबूरानी, 1989 (बच्चों की कहानियाँ)
- राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश (संपादन)

हिन्दी कृतियां :–

- उषा, 1946 (कविताएं)
- बापू के तीन हत्यारे, 1948 (आलोचना)
- ज्वाला साप्ताहिक में स्तम्भ, 1949 –1952
- साहित्य और समाज, 1960 (निबन्ध)
- अनोखा पेड़, (सचित्र बच्चों की कहानियाँ) 1968
- फुलवारी, 1992
- चौधरायन की चतुराई, (लघु कथाएं) 1996
- अन्तराल, 1997 (लघु कथाएं)
- सपन प्रिया, 1997 (लघु कथाएं)
- मेरो दर्द ना जाणे कोय, 1997 (निबन्ध)
- अतिरिक्ता, 1997 (आलोचना)
- महामिलन (उपन्यास) 1998
- प्रिया मृणाल 1998 (लघु कथाएं)
- साहित्य और समाज
- अंतराल, 1998

- उजाले के मुसाहिब, 2006
- उलझन
- त्रिवेणी
- दुविधा
- दोहरी जिन्दगी
- प्रतिशोध
- प्रिय मृणाल
- प्रेमचन्द की बस्ती (सह लेखन)
- रास्ते की तलाश
- लाजवंती
- दासी की दास्तान
- परिक्रमा

शोध उद्देश्य :–

1. विजयदान देथा के साहित्य के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक, लोक जीवन के क्षेत्रों पर दृष्टिपात करना।
2. आधुनिक दौर में राजस्थानी लोक जीवन से नवीन पीढ़ी को अवगत करवाना।
3. कुरीतियों पर चोट करके उनके आज के परिप्रेक्ष्य में समाधान ढूंढ़ना ।
4. ग्रामीण लोक संस्कृति व जीवन मूल्यों को बचाना।
5. सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना।
6. हिन्दी कथा साहित्य में "बिज्जी" के अवदान को स्पष्ट करना ।

उपलब्ध साहित्य की समीक्षा :–

आधुनिक काल में विशेष कर आजादी के बाद हिन्दी कथा साहित्य में विभिन्न शिल्प विधानों और विधाओं का विकास हुआ। इनमें हिन्दी की विभिन्न क्षेत्रिय उपभाषाओं के साहित्य का प्रचुर मात्रा में विकास हुआ। इसमें राजस्थानी भाषा साहित्य में विजयदान देथा "बिज्जी" का योगदान भी अविस्मरणीय है "बिज्जी" ने अपनी कथा कहानियों के माध्यम से समाज के निचले और उपेक्षित तबके से

पाठकों को रूबरू करवाया। इन्होंने अपनी कहानी कथाओं की भाषा राजस्थानी रखकर अपने पाठक वर्ग का खूब विस्तार किया। यह अपनी रचनाओं के द्वारा समाज में व्याप्त आडम्बर और कुरीतियों पर चोट करते है। यह अपने व्यंग्य के द्वारा शासन में फैले भ्रष्टाचार पर चोट करते हैं, इनकी कहानी उजाले के मुसाहिब के द्वारा इन्होंने अज्ञानी और मुर्खराजा और जनता पर खूब कटाक्ष किया। इनकी यह कहानी अज्ञानता की और मूर्खता की पहचान करने में एक राजा और प्रजा का मेल करती हुई प्रतीत होती हैं।

"बिज्जी" की कहानियों व रचनाओं में लोक जीवन व संस्कृति की सम्पूर्ण झलक दिखाई देती है वह अपने रचना संसार से लोक जीवन के गूढ़ तत्वों को बाहर लाने में सफल हुए।

शोध प्रविधि :—

मानव मन की जिज्ञासा का ही विकसित रूप अनुसंधान है। अनुसंधान के द्वारा ऐसे नये तथ्यों की खोज की जाती है जो आज तक प्रकाश में नहीं आ पाये और जिनके प्रकाश में आने से मानव जीवन के विकास में साहित्यिक योगदान परिलक्षित होगा।

इस अनुसंधान में विजयदान देथा के साहित्य को विभिन्न स्थानों से एकत्र करके उसका गहन अध्ययन किया जायेगा, और इस अध्ययन से प्राप्त सामग्री व तथ्यों का विश्लेषण कर नवीन तथ्य और निष्कर्ष निकाले जायेंगे। इस कार्य के लिए विभिन्न शोध प्रविधियां जैसे खोज विधि, साक्षात्कार विधि, प्रश्नावली विधि, व्यक्ति इतिहास अध्ययन पद्धति, पांडुलिपियां, शोध प्रतिवेदन, आलोचनात्मक पद्धति इत्यादि का उपयोग करके अनुसंधान को पूरा किया जायेगा। इस अनुसंधान द्वारा प्राप्त निष्कर्ष से लोक जीवन के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के उपाय करने पर जोर दिया जायेगा। जिससे भावी पीढ़ी अपने पूर्वजों के ज्ञान को सहज कर आगे वाली पीढ़ी तक ले जा सके। इसके द्वारा "बिज्जी" के साहित्य स्वरूप के एक नवीन रूप से पाठकों को अवगत कराया जायेगा।

शोध की आवश्यकता :—

अब तक कोई पुस्तक या शोध विजयदान देथा के साहित्य का समग्र मूल्यांकन विषय पर नहीं किया गया हैं। इस विषय पर मेरा ध्यानकर्षण जे.वी.एन. प्रो. निरूपमा हर्षवर्धन मैम ने किया तो मैं भी इस विषय पर अनुसंधान करने के लिए तैयार हो गया और परम आदरणीय मैम जे.वी.एन. प्रो. निरूपमा हर्षवर्धन के मार्गदर्शन में मैंने यह शोध विजयदान देथा के साहित्य का समग्र मूल्यांकन पर करना शुरू किया। इस कार्य को शुरू करने में ज्योति विद्या पीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर की शोध निदेशक श्रीमती डॉ. मिनी अमित अरावतिया मैम का भी विशेष स्नेह रहा, जिसकी बदौलत मैंने यह एक

अनुसंधान जैसे विषय पर सरलता से अपना कार्य शुरू कर सका। जब इस विषय पर शोध के लिए मैंने रूपायन संस्थान बोरून्दा से सम्पर्क किया तो उन्होंने भी इस विषय पर शोध के लिए पर्याप्त सामग्री के लिए हामी भर कर मेरा उत्साहवर्धन किया इस प्रकार से मैंने "बिज्जी" के साहित्य का समग्र मूल्यांकन पर शोध करने का निश्चय किया।

इस शोध कार्य के द्वारा मैं "बिज्जी" के साहित्य की समीक्षा को उनके पाठकों तक पहुंचाने के लिए अपनी और से भरपूर प्रयत्न करूंगा।

विजयदान देथा का नारी चिन्तन :–

विजयदान देथाः– "बिज्जी" ने अपनी लेखनी के द्वारा हिन्दी और राजस्थानी साहित्य में उपेक्षित नारी जीवन का भी मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। अपनी कथा कहानियों में नारी पात्र योजना के द्वारा यह कार्य "बिज्जी" ने बखूबी किया।

"बिज्जी" ने उपेक्षित शोषित नारी का यर्थात चित्रण कर उस समय व वर्तमान में भी नारी जीवन की प्रासांगिता को बताने की कोशिश की हैं। "बिज्जी" के नारी पात्रों में संवेदना व लोक संस्कृति के विकास की झलक दिखाई देती है, व लोक जीवन में अपने विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक रंग–रूप को अपने किरदार में बखूबी निभाती है, पुरूष के सभी कार्यों में नारी कंधे से कंधा मिलाकर उनके कार्यों को आगे बढ़ाती है, और समाज व परिवार के विकास में योगदान देती है "बिज्जी" ने नारी के परिवार, समाज के विकास में एक धुरी के रूप में इंगित किया है। जो अपने बलबुते इस समाज की दिशा दशा बदलने की हिम्मत और साहस रखती है। यह नारी अबला नहीं होकर अपने सबला रूप को प्रकट कर मानव जीवन का कल्याण करती है।

शोध का महत्व :–

गद्य साहित्य को मनुष्य की अभिव्यक्ति का सहज और सरल माध्यम माना जाता है। कहानी कथा साहित्य गद्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। जिसके द्वारा रचनाकार अपनी बात को जनमानस तक सहज व सरल रूप से व तेजी से पहुंचा सकता है। "बिज्जी" हिन्दी की राजस्थानी उपभाषा के जातिय गद्य लेखक रहे हैं। इन्हें राजस्थानी का भारतेन्दु कहा जाता है। कहानी के क्षेत्र में यह राजस्थान के प्रेमचन्द कहलाते है। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से ग्रामीण लोक जीवन की संस्कृति को लोगों की रग–रग में भर दिया। इनकी सम्पूर्ण रचनाएं स्थानीय भाषा के अनुरूप व सहज सरल होने से अपनी पहुंच पाठकों तक तेजी से करने में सक्षम है।

अध्ययन के समय मेरी रूचि "बिज्जी" की कथा कहानी साहित्य में जाग्रत हुई तो जब मुझे शोध

का मौका मिला तो मैंने परम आदरणीय जे.वी.एन. प्रो. निरूपमा हर्षवर्धन के मार्गदर्शन में विजय दान देथा के साहित्य का समग्र मूल्यांकन पर अपना शोध शुरू करने का निश्चय किया।

यह विषय हिन्दी के शोधार्थियों के लिए आने वाले समय में उपयोगी सिद्ध होगा ऐसा मैं भरपूर प्रयत्न करूंगा।

अध्ययन की रूपरेखा :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन को पूरा करने के लिए शोध की रूपरेखा तैयार करना आवश्यक होता हैं, प्रस्तुत अध्यायीकरण के द्वारा शोध के उद्‌देश्यों को पूरा किया जायेगा।

1. **अध्याय–01** विजयदान देथा का व्यक्तित्व एव ंकृतित्व इस अध्याय में हम विजयदान देथा के व्यक्तित्व, बचपन और उनके जीवन के उतार–चढ़ाव और संघर्षों के बारे में अध्ययन करेंगे। इस अध्याय में "बिज्जी" के रचना संसार का अर्थात कृतित्व का भी अध्ययन करेंगे।

2. **अध्याय–02** विजयदान देथा के साहित्य में सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य इस अध्याय में हम विजयदान देथा के कथा साहित्य द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना पर अध्ययन करेंगे, कि किस प्रकार "बिज्जी" ने अपने सांस्कृतिक मूल्यों की पुनः स्थापना की कोशिश की।

3. **अध्याय–03** विजयदान देथा के साहित्य में राजस्थानी लोक जीवन प्रस्तुत शोध में इस अध्याय में "बिज्जी" के द्वारा राजस्थानी लोक जीवन के निकट से किये गए साक्षात्कार का अध्ययन करेंगे "बिज्जी" ने राजस्थान के लोक जीवन को स्वयं निकट से जिया है।

4. **अध्याय–04** विजयदान देथा का हिन्दी के कथा साहित्य में योगदान इस अध्याय में विजयदान देथा के हिन्दी कथा साहित्य में उनके योगदान और कथा साहित्य का हिन्दी में विकास पर अध्ययन करेंगे।

5. **अध्याय–05** विजयदान देथा का राजस्थानी भाषा साहित्य में योगदान इस अध्याय में विजयदान देथा के राजस्थानी भाषा साहित्य के क्षेत्र में योगदान पर विस्तृत अध्ययन किया जायेगा। "बिज्जी" ने अपनी लेखनी के द्वारा अपनी मातृभाषा राजस्थानी की सेवा की।

6. **अध्याय–06** विजयदान देथा की कहानियों में सामाजिक चेतना प्रस्तुत शोध में इस अध्याय में विजयदान देथा की रचनाओं द्वारा सामाजिक चेतना के विकास का अध्ययन किया जायेगा। इन्होंने अपनी कहानियों से उपेक्षित और पिछड़े तबके को मुख्य धारा में लाने की कोशिश की।

7. **उपसंहार–** उपसंहार के अन्तर्गत विजयदान देथा के साहित्य का समग्र मूल्यांकन उसकी महत्ता एवं प्रासंगिकता को उजागर करने का प्रयास किया जायेगा। साहित्य के द्वारा मनुष्यों के भावों का संचार एक दूसरे में सहजता से किया जा सकता हैं, इसमें "बिज्जी" के जीवन, उनका संघर्ष, साहसिकता और उनकी रचना कर्म को विस्तार से बताया जायेगा, इसकी आज वर्तमान समय में क्या प्रासंगिकता है, इस बात पर भी प्रकाश डाला जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

आधार ग्रन्थ सूचीः–

1. बातां री फुलवारी भाग–1–14 (राजस्थान की कदीमी लोक कथावां)– विजयदान देथा, रूपायन संस्थान बोरून्दा(2021 वि.सं.)
2. राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश भाग–1–8 विजयदान देथा
3. रूंख–विजयदान देथा (सम्यक रचनावली) वाणीपुरम रूपायन संस्थान, बोरून्दा
4. विजयदान देथा–राजस्थानी साहित्य अकादमी, उदयपुर
5. पुनर्नवा–एक सांस्कृतिक दस्तावेज– डॉ. शालिनी मूलचन्दानी–श्री नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर 2005
6. प्रतिश्रृति–जून 2004 भारतीय विद्या भवन, जोधपुर
7. आधुनिक राजस्थानी साहित्य– प्रेरणा स्त्रोत और प्रवृतियां 1974 डॉ. किरणनाहटा (चिन्मय प्रकाशन)
8. समकालीन हिन्दी आलोचना–सं. परमानन्द श्रीवास्तव साहित्य अकादमी 1998
9. पुस्तक समीक्षा का इतिहास–डॉ श्रीमती संतोष संघी–मंगल प्रकाशन जयपुर 1985
10. साहित्य संगीत और कला–कोमल कोठारी–राजस्थानी शोध संस्थान 1960
11. राजस्थानी भाषा और साहित्य– डॉ. हीरालाल माहेश्वरी 2017 वि.सं.
12. तीडोराव–विजयदान देथा–रूपायन संस्थान बोरून्दा
13. कच्छः लोक एवं संस्कृति– डॉ. गोवर्द्धन शर्मा, डॉ भावना मेहता–चिन्ता प्रकाशन पिलानी
14. आधुनिक राजस्थानी कहानी ओर लोक जीवन–चेतन स्वामी कथा राज प्रकाशन 2000
15. समकालीन राजस्थानी कहानियां– चेतन स्वामी–रा.भा. एवं सा.अ. बीकानेर 1990
16. अंतरालः विजयदान देथा, जनवाणी प्रकाशन दिल्ली, 1998

17. अनोखा पेड़ः विजयदान देथा रूपायन संस्थान बोरून्दा, 1968

18. अलेखूं हिटलरः विजयदान देथा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1984

19. उजाले के मुसाहिब : विजयदान देथा, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली 2006

20. उलझन : विजयदान देथा अंनु. कैलाश कबीर सारांश प्रकाशन दिल्ली 1995

21. चौधराइन की चतुराई : विजयदान देथा अंनु. कैलाश कबीर सायर प्रकाशन बोरून्दा 1997

22. त्रिवेणी : विजयदान देथा भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली 2006

23. दश प्रतिनिधि कहानियां : विजयदान देथा वाणी प्रकाशन

24. दुविधा : विजयदान देथा अंनु. कैलाश कबीर सारांश प्रकाशन दिल्ली 1995

25. दोहरी जिन्दगी : विजयदान देथा पेंदइनबूक्श इंडिया नई दिल्ली 2007

26. प्रतिशोध : विजयदान देथा, अंनु. कैलाश कबीर वाणी प्रकाशन दिल्ली 2002

27. प्रिय मृणाल : विजयदान देथा जनवाणी प्रकाशन दिल्ली 1998

28. प्रेमचन्द की बस्ती सं. एवं सह लेखन विजयदान देथा कोमल कोठारी राज महेता के साथ जनवाणी प्रकाशन दिल्ली 1998

29. मेरौ दरद न जानै कोय : विजयदान देथा, जनवाणी प्रकाशन दिल्ली 1998

30. रास्ते की तलाश : विजयदान देथा सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन दिल्ली 2008

31. लाजवंती : विजयदान देथा अंनु. कैलाश कबीर वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर 2001

32. सपनप्रिया : विजयदान देथा भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली 1998

33. साहित्य और समाज : विजयदान देथा चौपासनी शोध संस्थान जोधपुर 1959

सहायक संदर्भ ग्रंथः—

1. आधुनिक हिन्दी कहानी— लक्ष्मीनारायण लाल हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर हीराबाग बम्बई 1962

2. कहानी और कहानीकार—मोहन लाल जिज्ञासु, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली 2010

3. कहानी के नये प्रतिमान—कृष्ण कुमार वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली द्वितीय संस्करण 2005

4. कहानी : स्वरूप और संवेदना— वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2000

5. कहानी और संवेदना— राजेन्द्र यादव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नयी दिल्ली 1965

6. कहानी नयी कहानी तक : कथा यात्रा–राजेन्द्र यादव , अक्षर प्रकाशन नयी दिल्ली 1967
7. कहानी : नई कहानी– डॉ. नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण 1994
8. तीन खेल–तनवीर हबीब, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली 2004
9. नयी कहानी : संदर्भ और प्रकृति– सं. देवी शंकर अवस्थी, राज कमल प्रकाशन दिल्ली
10. नई कहानी की भूमिका– कमलेश्वर, अक्षर प्रकाशन नयी दिल्ली 1966
11. पटकथा लेखन : एक परिचय– मनोहर श्याम जोशी राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2000
12. बोरून्दा डायरी (अप्रतीम बिज्जी का विदागीत)– मालचन्द तिवाड़ी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2014
13. राजस्थान का लोक साहित्य–नानूराम सांस्कृता, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
14. राजस्थान के कहानीकार– सं. दीनदयाल ओझा, राजस्थान साहित्य अकादमी प्रकाशन उदयपुर 1995
15. राजस्थान लोक साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन–सोहनदान चारण, राजस्थान साहित्य मन्दिर जोधपुर 1980
16. राजस्थानी गद्य शैली का विकास– डॉ. रामकुमार गरवा, देवनारायण प्रकाशन जयपुर
17. राजस्थानी बात साहित्य– डॉ. मनोहर शर्मा एक अध्ययन, राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर
18. राजस्थानी लोक साहित्य की रूपरेखा– डॉ. मनोहर शर्मा, साहित्य भवन इलाहाबाद 1963
19. राजस्थानी कहानी– अर्जुन देव चारण, राजस्थानी साहित्य संस्थान 1998
20. राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा– मोतीलाल मेनारिया, छात्र हितकारी पुस्तक माला प्रयाग
21. लोक संस्कृति की रूपरेखा – कृष्णदेव उपाध्याय, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
22. विजयदान देथा रचना संचयन– सं. कैलाश कबीर, साहित्य अकादमी प्रकाशन नई दिल्ली
23. विजयदान देथा लोक एवं संस्कृति– डॉ. गार्गी चौधरी, नवजीवन पब्लिकेशन जयपुर
24. विजयदान देथा के हिन्दी कथा साहित्य में अभिव्यक्त लोक जीवन का अनुशीलन शोध प्रबंन्ध, गोविंदराम
25. विजयदान देथा की लोक कहानियों में कहन शैली का अध्ययन (बाता री फुलवाड़ी के प्रथम छः खण्डों के विशेष संदर्भ में) शोध प्रंबध श्रीमती सुनिला छापर

26. स्वातंत्र्योतर हिन्दी कहानी का विकास– डॉ. सुबेदार राय, अनुभव प्रकाशन कानपुर 1989

27. स्वातंत्र्योतर हिन्दी कहानीः कथ्य और शिल्प–डॉ. शिवशंकर पांडेय, आलेख प्रकाशन दिल्ली 1975

28. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास– रामस्वरूप, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद

29. हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल साहित्य भवन इलाहाबाद 1960

30. हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान– डॉ. रामदरश मि़श्र, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली 2007

31. हिन्दी कहानी का उद्‌भव और विकास– डॉ. सुरेश सिन्हा, अशोक प्रकाशन दिल्ली 1967

32. हिन्दी कहानी का विकास– डॉ. देवेश ठाकुर, संकल्प प्रकाशन बम्बई 1992

33. हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा– सं. डॉ. रामदरश मिश्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नयी दिल्ली

34. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आ. रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा काशी

35. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स नोएडा 45 पुनर्मुद्रण

36. हिन्दी साहित्य कोश– सं. धीरेन्द्र वर्मा ज्ञान मण्डल लिमिटेड कबीर चौरा वाराणसी

37. हिन्दी साहित्य कोश भाग–II– सं. धीरेन्द्र वर्मा ज्ञानमण्डल लिमिटेड कबीर चौरा वाराणसी

38. हिन्दी साहित्य– प्रथम खण्ड– सं. धीरेन्द्र वर्मा एवं ब्रजेश्वर वर्मा भारतीय हिन्दी परिषद– प्रयाग संवत 2015 वि.

39. हिन्दी साहित्य द्वितीय खंड– धीरेन्द्र वर्मा ब्रजेश्वार वर्मा– भारतीय हिन्दी परिषद प्रयाग

40. हिस्ट्री ऑफ राजस्थानी लिट्रेचर– डॉ. हीरालाल माहेश्वरी– साहित्य अकादमी 1980

41. राजस्थानी लेखक परिचय कोश सं. मोहन लाल गुप्ता शुभदा प्रकाशन जोधपुर 2002

42. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य– डॉ. हीरालाल माहेश्वरी– आधुनिक–पुस्तक भवन कलकता 1960

43. राजस्थानी साहित्य का इतिहास– वी.एल. माली 1990

44. आधुनिक राजस्थानी साहित्य एक शताब्दी– शांति भारद्वाज 1986

45. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य– डॉ. मोतीलाल मेनारिया– हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

46. राजस्थानी बातां– सं. सौभाग्य सिंह शेखावत

47. राजस्थानी साहित्य और संस्कृति– सं. मनोहर प्रभाकर 1956

48. पद्मावत का लोककालिक अध्ययन –डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद वर्मा–अनुपम प्रकाशन पटना

49. पद्मावत के लोकतत्व–रवीन्द्र भ्रमर काशी ना. प्रचारिणी सभा।

50. ब्रजलोक संस्कृति–सम्पा. डॉ. सत्येन्द्र प्रकाशक–ब्रज साहित्य मण्डल

51. भारतीय लोक साहित्य– डॉ. श्याम परमार राजकमल प्रकाशन दिल्ली

52. भारतीय संस्कृति (महाकाव्यों के आलोक में) डॉ. देवराज प्रकाशक उतर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ 1979

53. लोक संस्कृति के प्रवर्तक सूर– डॉ. रामशरण गौड़ विभूति प्रकाशन दिल्ली

पत्र पत्रिकाएंः–

1. लोक संस्कृति रूपायन संस्थान, बोरून्दा (जोधपुर)

2. मरूवाणी राजस्थानी भाषा प्रचार सभा, जयपुर

3. मरूभारती बिड़ला एजूकेशन ट्रस्ट, पिलानी

4. परम्परा राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, जोधपुर

5. वरदा राजस्थानी साहित्य समिति, बिसाउ

6. राजस्थानी गंगा, राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान, बीकानेर

7. जलमभोम, बीकानेर

8. जागतीजोत, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर

9. माणक प्रकाशन जालोरी गेट, जोधपुर

10. पणियारी, राजस्थानी भाषा बाल साहित्य प्रकाशन, लक्ष्मणगढ, (सीकर)

11. राजस्थली, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, श्री डूंगरगढ़, बीकानेर

12. मरूश्री, लोक संस्कृति शोध संस्थान, नगरश्री चुरू

13. शोध पत्रिका, साहित्य संस्थान, उदयपुर

14. दैनिक भास्कर समाचार पत्र

15. प्रेरणा सं. कोमल कोठारी जोधपुर

16. रूपम सं. विजयदान देथा जोधपुर

17. वाणी सं. विजयदान देथा बोरून्दा

18. विजयदान देथा : राजस्थानी कथा यात्रा पिंकी शर्मा आलेख

19. मधुमती उदयपुर

20. राजस्थान पत्रिका जोधपुर

कोश ग्रंथ सूची

1. नालंदा विशाल शब्दसागर — सं. श्री नवल जी

2. राजस्थान– हिन्दी कहावत कोश — सं. विजयदान देथा

3. राजस्थानी सबद कोश — सं. सीताराम लालस

4. हिन्दी साहित्य कोश — सं. धीरेन्द्र वर्मा

5. हिन्दी शब्दसागर — सं. श्यामसुन्दर दास